17 मई 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 4 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

टोडरमल स्मारक में गुरुदेव जयंती संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर के तत्त्वावधान में दिनांक 7 मई को गुरुदेवश्री की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे, जिन्होंने गुरुदेवश्री की अनेक घटनाओं का स्मरण किया। अक्टूबर 2001 के गुरुप्रसाद में छपे नेमचंद हरिलाल शाह-घाटकोपर, मुम्बई के 'पूज्य गुरुदेवश्री को सम्यग्दर्शन कब' नामक आलेख की चर्चा करते हुए बताया कि गृहीत मिथ्यात्व की अवस्था में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति संभव नहीं है।

डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त मंचासीन ब्र.यशपालजी जैन, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री तारांचदजी सोगानी, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही सहज समागत अनेक स्नातक विद्वानों के अन्तर्गत पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित रमनजी शास्त्री एवं पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का शुभारंभ पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मुम्बई द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभा का संचालन डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया तथा आभार प्रदर्शन श्री संजयजी सेठी ने किया।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

(1) कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, तीर्थधाम मंगलायतन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर समिति पिड़ावा द्वारा आध्यात्मिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 29 अप्रैल से 7 मई तक किया गया।

यह शिविर मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश के 101 स्थानों पर आयोजित किया गया, जिसका सामूहिक उद्घाटन समारोह दिनांक 29 अप्रैल को देहगांव-रायसेन (म.प्र.) में हुआ। समारोह की अध्यक्षता पण्डित नागेशजी पिड़ावा ने एवं ध्वजारोहण श्री अनिलकुमारजी उज्जैन (पी.डब्ल्यू.डी. इंजीनियर) ने किया। शिविर का सामूहिक समापन समारोह

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

गुरुदेवश्री की जयंती संपन्न

(1) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के परिसर में दिनांक 24 से 28 अप्रैल तक आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की जन्म जयंती मनायी गयी।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभय कुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

आयोजन में तीन लोक मण्डल विधान एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित प्रवचनसार मंडल विधान का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अनिलजी धवल एवं पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न हुये। **- कांतिभाई मोटानी, मुम्बई**

(2) अमेरिका स्थित **स्वाध्याय इन्फो ग्रुप** के माध्यम से टेली कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा दिनांक 2 मई को गुरुदेव जयंती का कार्यक्रम बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम डॉ.संजीवजी गोधा जयपुर के मार्मिक उद्बोधन के उपरांत **चैटेनोगा** से सुशीलाबेन व नवीनभाई, **कैलिफोर्निया** से मुकुन्दभाई, **शिकागो** से प्रदीपभाई व कुशलजी, **नॉर्थ कैरोलिना** से इन्दिराबेन, **बोस्टन** से संगीताबेन, सुधाजी मेहता, मणिबेन शाह, **पिट्सबर्ग** से शांतिभाई म्होनोत तथा **न्यूजर्सी** से मनीषाबेन ने गुरुदेवश्री के प्रति अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया।

(3) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 अप्रैल को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का 128वाँ उपकार दिवस संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन हुये एवं विविध वक्ताओं द्वारा गुरुदेवश्री के जीवनपर मंगल उद्गार व्यक्त किये गये। साथ ही एक धार्मिक गोष्ठी का भी आयोजन हुआ। सायंकाल बाल कक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त अनेक विद्वानों द्वारा गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर उद्गार व्यक्त किये गये। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का
41वाँ अधिवेशन खनियांधाना में
शनिवार, दिनांक 27 मई 2017

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

बेचारे सेठजी को क्या पता कि यह सब तो माया की महिमा है, इसमें अपना क्या बड़प्पन है। 'माया तेरे तीन नाम, परसा, परसु परसराम' वाली कहावत उन पर पूर्णरूपेण घटित होती थी। उन्होंने भी 'सिद्धा, सिद्धो से लेकर सिद्धोमलजी तक की नाम-यात्रा इसी पीढी में पूरी की है।

एक व्यक्ति जब निर्धन था तब लोग उसे 'परसा' कहकर पुकारा करते थे, जब वह कुछ धनवान हुआ तो लोग उसे 'परसु' कहने लगे तथा जब वह और अधिक धन सम्पन्न हो गया तो उसे सेठ परसरामजी कहकर पुकारा जाने लगा था।

जब सिद्धोमल बड़े आदमी बन गये तो अब समाज को अपने पक्ष में रखने के लिए एवं समाज में अपना सर्वोच्च स्थान सुरक्षित रखने के लिए और अपने नाम की प्रसिद्धि के अनुसार समय-समय पर चन्दा-चिट्ठा तो लिखाना ही पड़ता था, पर इतने सारे ब्लैकमनी (कालेधन) का खर्च कहाँ दिखावें ? एक यह समस्या भी तो उनके सामने रहा करती थी।

एतदर्थ उन्होंने अपने पूर्वजों के नामों पर ऐसे अनेक छोटे-मोटे ट्रस्ट बना रखे थे, जिनके माध्यम से वे अपनी अवैध सम्पत्ति को वैध एवं सुरक्षित करके अपने कुटुम्ब परिवार के हित में उसका मनमाने ढंग से सदुपयोग कर सकें और चन्दा-चिट्ठा भी दे सकें।

समय-समय पर मुखर-नेताओं, शासकीय अधिकारियों और कर्मचारियों तथा पत्र-पत्रिकाओं को चन्दा-चिट्ठा या उपहारों के नाम पर मुँहमांगा धन देकर उनका मुँह बन्द रख सकें और समय-समय पर समारोहों में उच्चासन पर सुशोभित होकर सम्मान पा सकें। इन सबके लिये निजी ट्रस्ट बनाना भी बहुत जरूरी होता है; क्योंकि इन ट्रस्टों की भट्टियों में तपकर ही तो काला धन सफेद हो सकता है न ?

इनके सिवाय सामाजिक ट्रस्टों के पदों पर आसीन होना भी उनकी आवश्यकता है; क्योंकि यदि उन पदों पर आसीन न हो पाये तो उन ट्रस्टों की धनराशि का सदुपयोग अपने ढंग से कैसे कर सकेंगे ? अत: थोड़ा-बहुत चन्दा-चिट्ठा लिखा करके उन ट्रस्टों में भी अपनी घुसपैठ किए रहते थे।

सेठ सिद्धोमल इन सब कामों में सिद्धहस्त थे। वे हमेशा यह गणित लगाया करते थे कि कब/कहाँ/किस प्रयोजन से पहुँचना है ? अत: कभी व्यापारिक कार्यों के नाम तो कभी सामाजिक मीटिंगों के नाम पर अपने दौरों के यात्रा भत्तों के बिल बना लिया करते थे। ताकि इन सब खर्चों को 'आयकर' में मुजरा कराया जा सके।

इन सबके कारण सेठ सिद्धोमल आवश्यकता से अधिक व्यस्त दिखाई देते थे। अत: कोई उनसे यह कहने की हिम्मत ही नहीं कर पाता था कि वे कुछ समय शान्ति से एक जगह ठहर कर धर्मलाभ लें, नियमित स्वाध्याय करें और अपनी जिन्दगी के अमूल्य क्षणों को सार्थक कर लें।

धर्म के नाम पर तो वे केवल धार्मिक मंचों के किसी विशिष्ट पद पर पदासीन होकर अपना भीषण-भाषण देकर और यथायोग्य दान की घोषणाभर करते रहते थे। वहाँ भी विद्वानों की दो अच्छी बातें सुनने का सुयोग उन्हें नहीं मिल पाता था; क्योंकि बड़े राजनेताओं की तरह यदि कार्य व्यस्तता बताकर बीच में ही न उठ जावें तो वे भी बड़े नेता कैसे कहलायेंगे ? अब तो वे बीमार भी रहने लगे थे, अत: अब उनसे अधिक दौड़-धूप भी संभव नहीं थी। भले ही प्लेन की यात्रा ही क्यों न हो, पर थकान तो उसमें भी होती ही है। अत: डॉक्टर उन्हें अधिक यात्रा की परमीशन नहीं देते थे।

संजू की चिन्ता का यही मुख्य विषय था। वह चाहता था कि एक तो उनकी यह दौड़-धूप कम हो और दूसरे उनको अनावश्यक तनाव जो संस्थाओं की उपाधियों के कारण होता है, तीसरे, वे एक जगह रहकर शान्ति से स्वाध्याय करें, तत्त्वाभ्यास करें तो धीरे-धीरे उनकी तनावजनित बीमारी भी ठीक होगी और उनकी ये महत्वाकांक्षाएँ भी अपने आप कम हो जायेंगी।

इसके लिये उसने अपने मित्र प्रो. ज्ञान, विज्ञान और सुदर्शन से कहा कि वे लोग ही कोई ऐसा रास्ता निकालें, उपाय खोजें, जिससे उसके पिताजी स्वाध्याय एवं तत्त्वाभ्यास में रुचि लेने लगें। वे चाहें तो डॉ. धर्मचन्द और राजू से भी सहयोग ले लें।

बड़े आदमियों को आमतौर पर जो बड़ी-बड़ी व्याधियाँ और उपाधियाँ होती हैं, सेठ सिद्धोमल भी उसके अपवाद नहीं थे, उन्हें भी लगभग सभी आधियाँ-व्याधियाँ और उपाधियाँ थीं; क्योंकि उन्होंने भी तो वे सब मुसीबतें मोल ले रखी थीं, जो आमतौर पर सब श्रीमन्तों को घेरे रहती हैं।

यद्यपि उनके सौभाग्य से अब उन्हें धन-दौलत कमाने की बिलकुल ही चिन्ता नहीं थी; क्योंकि उनके पास अटूट-असीमित चल-अचल सम्पत्ति थी, जिसके ब्याज और भाड़े से ही उन्हें लाखों रुपयों की आय का साधन हो गया था; पर प्राणी की

इच्छाओं की भी तो सीमा नहीं है। उन्हें पैसा कमाने की चिन्ता नहीं थी तो वे नाम कमाने और यश-प्रतिष्ठा प्राप्त करने के चक्कर में पड़ गये। इस कारण वे सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक संस्थाओं की नेतागिरी में उलझे रहते थे।

जगह-जगह का प्रदूषित पानी और टाइम-बे-टाइम खाना तथा दो-दो बजे रात तब जागना। पूर्ण अनियमित दिनचर्या, न कोई खाने-पीने और सोने का निश्चित समय और विश्राम का ठिकाना। कोई कितना भी लौह पुरुष क्यों न हो, आखिर इसतरह वह कब तक स्वस्थ रह सकता है ? शरीर तो आखिर शरीर ही है, वह कभी न कभी तो शिथिल होगा ही। तब फिर तनाव से होने वाले रोगों की तो बात ही जुदी है।

वैसे भी आचार्यों ने जहाँ आत्मा को ज्ञानमंदिर कहा है वहीं शरीर को व्याधि मंदिर भी कहा है और कहा है कि शरीर के एक-एक रोम में छियानवे-छियानवे रोग रहते हैं, जिनका इन प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रकुपित हो जाना स्वाभाविक ही है। अत: ऐसी प्रतिकूलताओं से जितना बचा जा सके, बचना चाहिए। पर सेठ सिद्धोमल ने ऐसा कुछ नहीं किया।

तनाव से मुक्त रहने और आत्म-शान्ति प्राप्त करने का एकमात्र उपाय जो स्वाध्याय, तत्त्वाभ्यास और चिन्तन-मनन है, सो उनमें उनका मन लगता नहीं था। मन को दोष देना भी व्यर्थ है; क्योंकि उन्होंने मन स्वाध्याय में और धर्मध्यान में लगाने का कभी प्रयत्न भी तो नहीं किया।

कोई भी काम क्यों न हो ? तत्त्वाभ्यास के अभाव में तनाव तो होता ही है। सेठ सिद्धोमल आजकल मानसिक तनाव में ही जी रहे थे, इसकारण वे उच्च रक्तचाप से पीड़ित तो थे ही, एक बार मस्तिष्क ज्वर जैसे भयंकर रोग का आक्रमण भी उन पर हो गया।

यह खबर नगर में करन्ट की तरह फैल गई। ज्योंही ज्ञान, विज्ञान और सुदर्शन को ज्ञात हुआ कि आज संजू के पापा को मस्तिष्क ज्वर हो गया है और डॉक्टरों ने उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी है तो ये सभी डॉक्टर धर्मचन्द को लेकर उनके यहाँ पहुँचे। डॉक्टर धर्मचन्द प्रसिद्ध फिजीशियन तो थे ही, धर्मात्मा और धर्ममर्मज्ञ भी थे अत: उन्होंने रोग की चिकित्सा का सत्यपरामर्श तो दिया ही, साथ में उन्हें संसार शरीर और भोगों की क्षणभंगुरता का भान भी कराया। और सब सामाजिक और राजनैतिक झंझटों से मुक्त होकर केवल धर्माराधना करने की सलाह दी।

वैराग्यमय वातावरण बनाते हुए ज्ञान, विज्ञान और सुदर्शन ने भी उन्हें मोक्षमार्ग पर अग्रसर होने को प्रोत्साहित किया।

कह नहीं सकते सेठ सिद्धोमल ने उस विकट परिस्थिति में कितना क्या ग्रहण कर पाया, पर देखते ही देखते उन्हें ब्रेन हेमरेज हो गया, उनके मस्तिष्क की नस फट गई। और वे ऐसे अचेत (बेहोश) हुए कि पुन: होश में आये ही नहीं।

उनके आँख से झरती अश्रुधारा केवल यह बता रही थी कि शायद उन्हें अपनी अमूल्य मनुष्य पर्याय निष्फल खोने का भारी पश्चाताप हो रहा है। उनका तो जो हुआ सो हुआ, पर उनके इस दुखद निधन से दर्शकों के हृदय अवश्य दहल गये। फलत: सभी ने अपने शेष जीवन को स्वाध्याय और संयम से सार्थक करने का दृढ संकल्प कर लिया।

एक ओर तो प्राणप्रिय पतिदेव के चिर-वियोग जनित असीम विरह वेदना, दूसरी ओर वैधव्य जीवन की सहगामी असंख्य संभावित-असंभावित विपत्तियों-आपत्तियों के कष्ट-कंटकों से भरी पहाड़-सी जिन्दगी। एक असहाय विधवा के लिए कितना दु:खद प्रसंग होता है यह ? क्या इसकी कोई कल्पना भी कर सकता है?

नई उम्र की विधवाओं को आये दिन नई-नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है सो अलग। वे बात-बात में संदेह की दृष्टि से ही देखी जाती हैं। न वे किसी को आँख उठाकर देख सकती हैं, न कोई उन्हें। न वे किसी से सहयोग ले सकती हैं और न किसी को सहयोग दे सकती हैं, जहाँ हँसी वहीं फँसी। अत: जीवनभर सहज होने का तो काम ही नहीं। जिन्दगीभर तनाव में जीना ही उनकी नियति है। कदम-कदम पर असुरक्षा, जहाँ/जिसका सहारा लेने की सोचें, सबसे पहले वही इज्जत लूटने को आमादा। भले ही वह रिश्ते में कुछ भी लगती हो, और उम्र में भी बहू-बेटी के बराबर ही क्यों न हो ? पर कामियों को न रिश्तों की परवाह न उम्र का लिहाज ! भूखे भेड़ियों की तरह चौबीसों घंटे इसी ताक में रहते हैं कि कहीं किसी तरह चंगुल में फंस जाय। अपने शील की सुरक्षा का कहीं कोई साधन नहीं, सदा सशंक जीवन।

ऐसी स्थिति में कोई लज्जाशील नारी शान्ति से रहना भी चाहे तो कैसे रहे ? कोई कितने भी फूँक-फूँककर कदम रखे, कैसे भी बच-बच कर क्यों न चले, पर कहीं न कहीं चक्कर में आने की संभावना से इन्कार भी तो नहीं किया जा सकता; क्योंकि किस के मन में कब/क्या भाव जग जाये - यह निर्णय करना बहुत कठिन है। ऐसा कुछ न भी घटे तो भी अफवाहों की शिकार हुए बिना न रहे। शुभ प्रसंगों पर उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है सो अलग। इन सब परिस्थितियों के कारण उसे अपनी मन:स्थिति को सामान्य रख पाना तलवार की धार पर चलने जैसा कठिन काम है।

(क्रमश:)

हम अपने अज्ञान की रक्षा करने में सिद्धहस्त हैं

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

''... समओ सव्वत्थ सुन्दरो लोए...'' अर्थात् लोक में आत्मा सबसे सुन्दर वस्तु है। एक बहुत बड़ी विडंबना और हमारा दुर्भाग्य है कि हम उसकी ओर देखना ही नहीं चाहते हैं, हमें उसकी चर्चा तक पसंद नहीं है, हमें उसके नाम से ही अरुचि है।

बड़े अभागे हैं **हम जो जी–जान से अपने अज्ञान की रक्षा कर रहे हैं। हमने इतने बाड़े और ताले लगाकर यह सुनिश्चित कर रखा है कि कहीं भूल से भी ज्ञान की एक किरण भी हमारे अन्दर प्रविष्ट न हो जाये।** प्राय: देखा जाता है कि हम पर जब जानने या करने का प्रतिबन्ध लगाया जाता है तब वह जानने और करने के प्रति हमारी जिज्ञासा व लालसा बलवती हो जाती है; परन्तु जब आत्मा की बात आती है तो यह बात लागू क्यों नहीं होती है ?

दुनिया में (जैन जगत में) हम आज ''आत्मा वाले'' के नाम से जाने जाते हैं। सब लोग यह जानते हैं कि हम लोग आत्मा–परमात्मा की चर्चा में ही व्यस्त रहते हैं। कुछ लोग निरंतर सक्रियतापूर्वक इस प्रयास में लगे रहते हैं कि लोग हमसे दूर ही बने रहें, कभी गलती से भी उनके कानों में हमारी बात न पड़ जाये। लोगों के इन्हीं प्रयासों को मैं उनके ''अज्ञान की रक्षा करने के प्रयास'' नाम देता हूँ।

क्यों ?

क्योंकि यह तो संभव ही नहीं कि **किसी के कानों में एक बार, बस एक बार हमारी, हमारी नहीं, अनन्त तीर्थंकर व गणधर देवों की, निर्ग्रंथ आचार्यों की और ज्ञानी धर्मात्माओं द्वारा प्रतिपादित एवं उद्घाटित यह भगवान आत्मा की (वस्तुस्वरूप की) चर्चा पड़े और फिर भी वह विमुख रह जाये, हमारा न बन जाये, अर्थात् आत्मार्थी न बन जाये।**

ऐसा हुआ भी है, अब तक लगातार होता आ रहा है, जो एक बार हम तक आ पहुंचा है, एक बार जिसने भगवान आत्मा का स्वरूप सुन व जान लिया है, वह हमेशा के लिये यहाँ का होकर ही रह गया है। कुछ लोगों ने तो इसे जादू की छड़ी का चमत्कार नाम ही दे डाला।

आज जब सारी दुनिया में अपने आपको चमत्कारी पुरुष कहलाने और मनवाने की होड़ लगी है, इसके लिये लोग क्या–क्या नहीं करते हैं, उन्होंने (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने) साफ–साफ कह दिया कि –

''हमारे पास कोई जादू की छड़ी नहीं है, यह हमारा नहीं, यह तो चैतन्य का चमत्कार है''

मैं दावे के साथ यह बात कह सकता हूँ कि वे लोग जो अन्य लोगों को इस मार्ग से विमुख रखने के प्रयासों में व्यस्त हैं, स्वयं नहीं जानते हैं कि हम क्या मानते हैं, क्या कहते हैं; क्योंकि स्वयं उन्होंने भी कभी यथार्थ को जानने और समझने का प्रयास ही नहीं किया है। वे भी अन्य लोगों द्वारा कही गई बातों के उसी प्रवाह में बह गये हैं कि 'वे (हम) ऐसा कहते हैं और ऐसा करते हैं'। यदि उन्होंने स्वयं हमारी ये बातें सुनी और समझी होती तो सचमुच वे भी हम जैसे ही हो गये होते, हमारे ही हो गये होते। हमारे क्या हो गये होते वस्तुस्वरूप के हो गये होते, अपने आप के हो गये होते, आत्मार्थी हो गये होते।

क्यों ?

क्योंकि हमारे पास कोई हमारे घर की नई बात तो है नहीं, यह तो अनन्त तीर्थंकरों, गणधरदेवों और आचार्य भगवंतों द्वारा बतलाया गया वस्तु का स्वरूप है, अपने आत्मा की बात है, अपने ही हित की बात है और **समझबूझकर भला कौन सत्य से, ज्ञानी से और अपने हितों से दूर बना रह सकता है ?**

वे सभी, जिन्होंने आज तक इस ओर ध्यान ही नहीं दिया या वे लोग जो किसी के कहने में आकर इस ओर से आँखें मूंदकर बैठ गये और स्वयं वे भी जो कि बिना बात जाने–समझे ही इस बात के विरोध में जुट गए हैं, जाने अनजाने स्वयं आपको व अन्य लोगों को आत्मकल्याण के मार्ग से विमुख करके अनर्थ का सृजन कर रहे हैं।

हमारी चर्चा का मूल विषय तो यह था कि ''किस प्रकार हम जी–जान से अपने अज्ञान की रक्षा करने में सिद्धहस्त हैं''।

''यह बात तो मुनिराजों के लिये है, यह तो निश्चयनय की बात है, यह तो एम.ए. के स्तर की बात है'' आदि बहानों से हम अपने आपको अपने भगवान आत्मा की बात सुनने से ही वंचित कर लेते हैं। घर में जिनवाणी रखने पर हमें अवमानना का डर लगता है, मंदिर में प्रवचन सुनने के लिये हमारे पास वक्त नहीं है। संस्कृत–प्राकृत हमें आती नहीं है, हिन्दी ग्रंथ तो पण्डितों के लिये हुए हैं आदि; या फिर ''अभी तो बचपना है अभी से क्या धरम–करम के फेर में पड़ना या अभी तो करियर बनाने का समय है, जवानी के दिन तो जिन्दगी एन्जॉय करने के दिन होते हैं, अब बुढापा आ गया है, अब तो हमसे कुछ भी नहीं होता है, सुनाई और दिखाई देता नहीं, चला और बैठा जाता नहीं, कुछ सुन–पढ भी लें तो कुछ समझ में आता नहीं है'' आदि भी ऐसे ही बहाने हैं, जो धर्म और हमारे बीच सुरक्षित दूरी बनाये रखते हैं।

जिनवाणी में समागत सभी नय और चारों ही अनुयोग हम सभी के लिये हैं। जिसप्रकार किसी भी विषय की सम्पूर्ण जानकारी के अभाव में सफलता मिलना संभव नहीं है उसीप्रकार आत्मकल्याण के लिये हमें जिनवाणी के मर्म को भी गहराई से समझना ही होगा और यह कार्य इसी मानव जीवन में, सम्पूर्ण सक्षमता, सक्रियता और जागरूकता की अवस्था में ही किया जा सकता है।

दुनियादारी के मामलों में हम अपने हितों के प्रति किसप्रकार, कितने सजग रहते हैं ? यूं ही किसी के कहने–सुनने में आकर अपने फैसले नहीं कर लेते हैं वरन् अनेकों स्रोतों से प्रत्येक बात की गहराई से जाँच–परख करने के बाद ही अपना निर्णय करते हैं; क्योंकि हमें उन बातों से अपने हित जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। अपने हृदय का ऑपरेशन किस डॉक्टर से करवाना है इस

बात का निर्णय हम अत्यंत सावधानीपूर्वक करते हैं, न तो किसी के द्वारा सन्दर्भ दिये जाने मात्र से किसी से ऑपरेशन करवा लेते हैं और न ही किसी को ठुकरा देते हैं; **तब धर्म के मामले में अपने आत्महित से सम्बन्धित बातों में हम इतने निष्ठुर क्यों हैं ?**

आज हम जिस हालात में हैं, संसार में भ्रमण कर रहे हैं, इससे यह तो तय है कि हम गलती पर हैं, हमारा मार्ग सही नहीं है। तब सही मार्ग क्या है, हमारा हित किसमें है, इस बात की खोज में हम सक्रिय क्यों नहीं होते हैं ? **क्या यही हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य नहीं है ? यदि हम जंगल में भटक गए हों तो क्या सही मार्ग की खोज हमारी सर्वप्रथम प्राथमिकता नहीं होनी चाहिये ?** तब भी क्या हम उस जंगल में बहुमूल्य रत्नों की खानें ही खोजते रहेंगे ? यदि हम ऐसा करेंगे तो रत्न तो मिलें या न मिलें पर हम वहीं भटककर भूखे-प्यासे अपना जीवन त्याग देंगे।

यदि हमें अपनी जीवनरक्षा करनी है तो सर्वप्रथम सम्पूर्ण शक्ति के साथ अपने घर की वापसी का मार्ग ही खोजना चाहिये। इसी प्रकार हम अपने स्वरूप को न जानकर आज तक संसार में भटककर दु:खी हो रहे हैं तो भोगविलास में न उलझकर अपने स्वरूप की पहिचान का, अपने कल्याण का, अपने शाश्वतधाम (मोक्ष) का मार्ग खोजने में जुटना चाहिये। **किसी के कहने-सुनने मात्र से अपने हितों को तिलांजलि दे देना अक्षम्य अपराध है, जिसका दंड है अनंतकाल तक भवभ्रमण।**

उचित यही है कि अब हम अपने अज्ञान के संरक्षक न बने रहें, अज्ञान को दूर कर ज्ञानी बनें और आत्मकल्याण के मार्ग पर लगें। ●

गुरुवाणी मंथन शिविर संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर नोएडा ग्वालियर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में आयोजित चतुर्थ गुरुवाणी मंथन शिविर दिनांक 22 से 26 अप्रैल तक सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्माधिकार पर, दोपहर में समयसार की 17-18 गाथा पर एवं रात्रि में प्रवचनसार की 80वीं गाथा पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त समागत विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा इन्हीं प्रवचनों के मुख्य बिन्दुओं के आधार पर गुरुदेवश्री की शैली और विषय का परिचय प्रतिदिन 6 प्रवचनों के माध्यम से कराया गया।

शिविर में श्री जिनेन्द्र शोभायात्रा एवं कर्मदहन मण्डल विधान का भी आयोजन हुआ। दिनांक 25 अप्रैल को दृष्टि का विषय भगवान आत्मा विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें आमंत्रित विद्वानों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित महेशचंदजी, पण्डित कमलेशजी, पण्डित नेमीचंदजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के मध्य में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के दो प्रवचनों का लाभ मिला। समस्त कार्यक्रम श्री सुनीलजी शास्त्री मुरार के संयोजकत्व में संपन्न हुये।

हार्दिक बधाई !

टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की छात्रा **कु. श्रुति जैन** को उपाध्याय वरिष्ठ में राज्य में प्रथम स्थान (अल्पसंख्यक बालिका वर्ग) प्राप्त करने के उपलक्ष्य में 'इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया, जिसके अन्तर्गत एक लाख रुपये एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर कु. श्रुति जैन ने आदरणीय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए सफलता का श्रेय महाविद्यालय के गुरुजनों को दिया। ज्ञातव्य है कि कु. श्रुति जैन महाविद्यालय के स्नातक एवं अध्यापक डॉ. दीपक जैन 'वैद्य' की सुपुत्री हैं। टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

(पृष्ठ 1 का शेष...)

दिनांक 7 मई को कोटा (राज.) में किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन ने की। विशिष्ट अतिथियों के अन्तर्गत श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री अरुणजी बज कोटा, श्री चिन्मयजी कोटा, पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, श्री सत्यनारायणजी, श्री रूपेशजी समैया भोपाल एवं श्री राजेन्द्रजी लाम्बावास आदि महानुभाव उपस्थित थे।

समारोह में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा मंगलमय विधान कराया गया। संपूर्ण शिविर का निरीक्षण श्री श्रवणकुमारजी समैया देहगांव, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, व्याख्याता सुरेन्द्रजी पिड़ावा, संकल्पजी शास्त्री कोटा एवं अरिहंतजी मड़ावरा द्वारा किया गया।

(2) राजकोट (गुज.): यहाँ दिनांक 3 से 7 मई तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर अत्यंत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, चैतन्यजी शास्त्री, सचिनजी सागर एवं पंकजजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 100 बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया।

(3) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के परिसर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा जवेरी बाजार मुम्बई द्वारा दिनांक 30 अप्रैल से 7 मई तक 19वाँ बाल संस्कार शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री, श्री आशीषजी शास्त्री, श्री विवेकजी शास्त्री, श्री जितेन्द्रजी शास्त्री, श्री देवांगजी शास्त्री, श्री नकुलजी शास्त्री, श्री अभिषेकजी शास्त्री, श्री प्रतीकजी शास्त्री, ब्र.चेतना बेन, श्रीमती स्वस्ति विराग जैन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में जिनेन्द्र पूजन के अतिरिक्त दोपहर में विभिन्न कक्षाओं के पश्चात् प्रोजेक्टर पर विशेष अध्ययन कराया गया। रात्रि में भक्ति के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीतमय कथा, प्रोजेक्टर पर विभिन्न प्रेरणादायी वीडियो सी.डी. का प्रदर्शन किया गया।

- वीनूभाई शाह-उल्लासभाई जोबालिया, मुम्बई

दृष्टि का विषय

33 नौवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

विशेष, अनेक, भेद एवं अनित्य – ये सभी पर्यायार्थिक नय का विषय होने के कारण पर्याय हैं। इन सभी के पर्याय होने का एकमात्र हेतु पर्यायार्थिकनय का विषय होना है।

सामान्य, एक, अभेद एवं नित्य – ये सभी द्रव्यार्थिकनय का विषय होने के कारण द्रव्य हैं। यही द्रव्य द्रव्यदृष्टि का विषय है और इसी के आश्रय से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति होती है।

दृष्टि के विषयभूत इस द्रव्य में सामान्य के रूप में द्रव्य, एक के रूप में अनन्तगुणों का अखण्ड पिण्ड, अभेद के रूप में असंख्यप्रदेशों का अखण्डपिण्ड और नित्य के रूप में अनन्तान्त पर्यायों का सामान्यांश-इन सभी को शामिल किया गया है।

अनन्तान्त पर्यायों के सामान्यांश को ही 'वृत्ति का अनुस्यूति से रचित प्रवाह' कहा जाता है। मैं यहाँ जानबूझकर 'पर्याय' शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता हूँ। यदि मैं इसकी जगह यह कहता हूँ कि दृष्टि के विषय में पर्यायों का अनुस्यूति से रचित प्रवाह शामिल है तो लोगों को लगता है कि मैंने दृष्टि के विषय में पर्याय को शामिल कर लिया है।

अरे भाई ! पर्यायों के प्रवाह से अलग कोई अन्य नित्य नहीं है। दृष्टि के विषय में इस नित्य का निषेध नहीं है। वहाँ निषेध तो प्रदेशभेद, गुणभेद का है। दो गुणों में लक्षण भेद होने से उसके लक्ष्य से विकल्प की उत्पत्ति होती है और अभेदवस्तु ख्याल में नहीं आती है; इसलिए दृष्टि के विषय में गुणभेद का निषेध किया है।

इसी संदर्भ में सातवीं गाथा के जयचन्दजी द्वारा लिखित भावार्थ में उठाये गये प्रश्न और दिए गये उत्तर का जो स्पष्टीकरण स्वामीजी ने किया है; वह भी द्रष्टव्य है –

''शिष्य का प्रश्न ठीक से समझना चाहिए। गुणभेदरूप पर्याय द्रव्य का ही अंश है, अवस्तु नहीं। यहाँ अवस्तु का अर्थ परवस्तु समझना चाहिए। जिसप्रकार शरीर परवस्तु है, कर्म परवस्तु है; भेदरूप पर्याय उसप्रकार की परवस्तु नहीं है। पर्याय तो स्वद्रव्य का ही अंश है, अतः निश्चय है; उसे व्यवहारनय कैसे कहा जाता है? – यह **प्रश्न** है शिष्य का।

इसी प्रश्न का **उत्तर** देते हुए यहाँ कहा गया है कि यद्यपि पर्याय वस्तु का ही भेद है, अवस्तु नहीं, परवस्तु नहीं; तथापि यहाँ पर्यायदृष्टि छुड़ाकर द्रव्यदृष्टि कराने का प्रयोजन होने से अभेद को मुख्य करके उपदेश दिया गया है। **भेद को गौण करने पर ही अभेद भलीभाँति प्रतिभासित होता है; इसलिए यहाँ भेद को गौण किया गया है।**

ध्यान रहे, यहाँ भेद को (भेदरूप व्यवहार को) गौण किया है, उसका अभाव नहीं किया गया है।

यहाँ अभिप्राय यह है कि भेददृष्टि में निर्विकल्पदशा नहीं होती, सम्यग्दर्शन नहीं होता; अपितु राग ही उत्पन्न होता है। अनन्तगुणात्मक, अनन्तधर्मात्मक भगवान आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, प्रभुता, स्वच्छता आदि अनन्तगुणों को लक्ष्य में लेने पर राग ही उत्पन्न होता है। नवतत्त्वों के भेद की बात तो दूर ही रहो, यदि गुण-गुणी का भेद भी खड़ा होगा तो निर्विकल्पदशा नहीं होगी। वस्तु और उसकी शक्तियाँ – ऐसा भेद भी दृष्टि का विषय नहीं बनता। **दृष्टि का विषय तो अभेद, अखण्ड, एक ज्ञायकभाव ही है। दृष्टि स्वयं पर्याय है, वह भी दृष्टि के विषय में नहीं आती, वह भी ध्यान का ध्येय नहीं बनती।**[१]''

मैंने यहाँ गुरुदेवश्री का उद्धरण देना इसलिए उपयुक्त समझा; क्योंकि अधिकांश लोग यही सोचा करते हैं कि यदि एक बार सिद्ध हो जाय कि इनका कथन गुरुदेवश्री, जयचन्दजी, राजमलजी आदि से नहीं मिले तो फिर हमारा काम सरल हो जायेगा। अरे भाई! ऐसा सोचने से किसी को कोई उपलब्धि नहीं होगी, अपितु यदि कोई ऐसा सिद्ध भी करना चाहता है तो उससे तत्त्वप्रभावना का काम ही रुकनेवाला है और कुछ भी होनेवाला नहीं है।

मैं यहाँ एक घटना का उल्लेख करना चाहता हूँ कि एक बार बम्बई में बोरीबली के त्रिमूर्ति मन्दिर में बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ था। उस सम्मेलन में आचार्य श्री विमलसागरजी सहित पण्डित श्री कैलाशचंदजी, पण्डित श्री जगन्मोहनलालजी, पण्डित श्री श्यामसुन्दरदासजी, प्रो. श्री नरेन्द्रप्रकाशजी, डॉ. लालबहादुर शास्त्री आदि सभी विद्वान तथा अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

१. प्रवचनरत्नाकर (गुजराती), भाग-१, पृष्ठ ११३

कहने का तात्पर्य यह है कि महासभा, परिषद् और महासमिति आदि सभी के सदस्य वहाँ उपस्थित थे। यह वह समय था, जिस समय **धन्य अवतार** पुस्तक निकली थी और यह किताब गाँवों–गाँवों में पहुँच चुकी थी तथा उस किताब का बहुत विरोध हो रहा था। ऐसी स्थिति देखकर उस सम्मेलन में पण्डितश्री श्यामसुन्दरदासजी, फिरोजाबादवालों ने मुझसे कहा –

''पण्डितजी ! आपने बहुत बढ़िया काम किया, जो **धन्य अवतार** किताब निकाल दी, इससे अब हमारा काम सरल हो जाएगा, अब हम आपको आसानी से उखाड़ कर फेंक देंगे।''

तब मैंने उनसे कहा कि आप हमें उखाड़ कर क्या करेंगे? अरे! पूज्य गुरुदेवश्री के अध्यात्म को सुनकर जिन श्वेताम्बर भाईयों ने दिगम्बर धर्म स्वीकार किया है तो आप हमें उखाड़कर क्या उन्हें फिर से श्वेताम्बर बनाना चाहते हैं? आप यह काम सरल करना चाहते हैं? यदि आप उन भाईयों को दिगम्बर बनाए रखना चाहते हैं, उन्हें दिगम्बर समाज से जोड़े रखना चाहते हैं, तो आपको यह काम हमारे माध्यम से ही करना होगा। उन्हें दिगम्बर समाज से जोड़कर रखने का हमारे अलावा दूसरा कोई साधन आपके पास नहीं है; क्योंकि हमने ही उनका विश्वास जीता है। यदि आपने हमें उखाड़कर हमारा माध्यम खो दिया तो फिर आपके पास उनसे सम्पर्क करने का साधन न रहेगा। मेरी इस बात पर गंभीरता से विचार करें।

जिसप्रकार श्रीमद् राजचन्दजी ने अपने तत्त्वज्ञान के बल पर अपने भक्तों को सुरक्षित रखा है; उसीप्रकार कानजीस्वामी के भक्त भी तत्त्वज्ञान के बल पर ही सुरक्षित रहेंगे।

मैंने उनसे यह भी कहा कि यदि आप चाहते हैं कि स्वामीजी के प्रभाव से जितने दिगम्बर मन्दिर बन गए हैं, वे सुरक्षित रहें और वे सभी लोग दिगम्बर ही बने रहें तो आपको हमारा सहयोग करना पड़ेगा।

आप इस प्रसंग पर खुशियाँ मना रहे हैं? **विरोध का रास्ता कोई रास्ता नहीं है, किसी को गालियाँ देने का रास्ता सच्चा रास्ता नहीं है। रास्ता हमेशा सकारात्मक होता है।**

यदि आपको पूज्य गुरुदेवश्री के अनुयायियों में कोई कमी लगती है तो जब प्रेम से बैठकर उन कमियों की चर्चा करेंगे और धीरे–धीरे उन लोगों को उन कमियों के बारे में कहेंगे तो वे अपनी कमियाँ जरूर निकालेंगे।

कमियाँ उनको बताने के बाद भी यदि वे नहीं निकाल पाते हैं तो भी कोई बात नहीं; क्योंकि हम सब लोगों के अन्दर भी तो बहुत कमियाँ हैं, यदि हमारे अन्दर कमियाँ नहीं होती तो हम ४ गति और ८४ लाख योनियों में भ्रमण नहीं करते।

यदि कानजीस्वामी के भक्तों में कमियाँ हैं और यदि वे कमियाँ आप निकालना चाहते हैं तो पहले **आप लोगों को कानजीस्वामी की जय बोलनी पड़ेगी, कानजीस्वामी की प्रशंसा करनी होगी, उनका गुणानुवाद करना पड़ेगा। ऐसा सुनकर जब स्वामीजी के भक्तों का हृदय गद्गद् हो जायेगा; तब आप उनसे उनकी कमियों को निकालने का आग्रह कर सकोगे, तभी यह संभव होगा कि वे अपनी कमी निकालें।**

यदि कानजीस्वामी को गालियाँ देकर इनकी कमियाँ निकालना चाहोगे तो यह संभव नहीं है; क्योंकि इन लोगों की जिनके प्रति अपार श्रद्धा है, उनको भला–बुरा कहने से इन्हें कोई बात नहीं समझाई जा सकती है। समझाना तो बहुत दूर की बात है – उन्हें यह बात बताई भी नहीं जा सकती है।

इतना कहने के बाद मैंने फिर उनसे कहा – यदि आप उन लोगों को दिगम्बर जैन समाज से जोड़कर रखना चाहते हो तो हम लोग ही वह जोड़ने का काम कर सकते हैं। यदि आप हमें उखाड़ना चाहोगे तो फिर यह संवाद का रास्ता भी समाप्त हो जायेगा।

इसीलिए मैं दृष्टि के विषय के संदर्भ में बार–बार गुरुदेवश्री के कथनों को उद्धृत कर यह बताना चाहता हूँ कि ऐसा नहीं है कि मेरे कथन गुरुदेवश्री के कथनों से नहीं मिलते हैं।

इसप्रकार गुरुदेवश्री ने गुणभेद के संबंध में प्रवचनरत्नाकर में कहा है कि अनन्तगुणात्मक, अनन्तधर्मात्मक भगवान आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, प्रभुता, स्वच्छता आदि अनन्त गुणों को लक्ष्य में लेने पर राग ही उत्पन्न होता है। नवतत्त्वों के भेद की बात तो दूर ही रहो, यदि गुण–गुणी का भेद भी खड़ा होगा तो निर्विकल्प दशा नहीं होगी। **वस्तु और उसकी शक्तियाँ – ऐसा भेद भी दृष्टि का विषय नहीं बनता। दृष्टि का विषय तो अभेद, अखण्ड, एक ज्ञायकभाव ही है। दृष्टि स्वयं पर्याय है, वह भी दृष्टि के विषय में नहीं आती, वह भी ध्यान का ध्येय नहीं बनती।** (क्रमशः)

17 मई 2017, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार में आपका भी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है-

प्रशिक्षण पाने हेतु प्रशिक्षण शिविर में पधारें

यदि आप चाहते हैं कि -

- आपके नगर, मुहल्ले और घर में वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन हो।

- आपके बालक जैनदर्शन का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करें

तो उक्त शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में स्वयं सम्मिलित हों, अपने परिजनों एवं बालकों को भी साथ लायें एवं प्रशिक्षण लेने हेतु अधिकतम लोगों को प्रेरित करें।

प्रशिक्षण शिविर के मुख्य आकर्षण

- सी.डी. के माध्यम से पू. गुरुदेवश्री के प्रवचन
- प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल के प्रवचन
- पूरे 18 दिन तक ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचन व समागम
- दिन में चार बार समागत विद्वानों के प्रवचन
- वृहद् विद्वत्समागम
- प्रौढ एवं बाल शिक्षण कक्षायें
- प्रवेशिका प्रशिक्षण एवं बालबोध प्रशिक्षण कक्षायें
- प्रतिदिन सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, विधान एवं भक्ति
- प्रतिदिन रोचक व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम
- युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन
- स्नातक परिषद का सम्मेलन
- विद्वत्परिषद की कार्यशाला

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर
9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम-अहमदाबाद	गुरुवाणीमंथन शिविर
23 जुलाई से 1 अग.	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

करणानुयोग शिविर

वक्ता - उज्ज्वला शहा, दिनांक 17 से 21 जून 2017 (प्रतिदिन 6 घंटे तथा अंतिम दिन 4 घंटे प्रवचन होंगे)

● आपके आने की पूर्व सूचना देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य दें, ताकि आपकी समुचित व्यवस्था की जा सके। ● आवास एवं भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। ● सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड भाग 1 और 2 सभी साधर्मियों को पूर्व शिविरों में दिया गया था, वह अवश्य साथ लावें। ● यह शास्त्र देवलाली में सशुल्क उपलब्ध रहेगा। **संपर्क सूत्र -** (1) दिनेशभाई शहा, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022 फोन - 022-24073581 www.jainsiddhant.org और (2) पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली-नासिक 422401 (महा.) फोन - 0253-2491044 अथवा (3) 173/175, मुम्बादेवी रोड़, मुम्बई 400002 फोन - 022-23425241

अक्षय तृतीया पर्व मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री वीतराग विज्ञान महिला मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 अप्रैल को अक्षय तृतीय महापर्व अत्यंत उल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: जिनेन्द्र पूजन के उपरान्त अक्षय तृतीय पूजन की जयमाला पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में ज्ञानदर्पण विषय पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा प्रवचन हुआ। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का वीडियो प्रवचन भी आयोजित किया गया। **- जिनकुमार शास्त्री**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com